Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 2, Issue - 6, Nov-Dec – 2019
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 1.847
Received on : 15/12/2019 Accepted on : 28/12/2019 Publication Date: 30/12/2019

नारी संघर्ष की अद्वितीय महागाथा : 'छिन्नमस्ता'

डॉ. देव्यानी महिड़ा
सहायक प्राध्यापिका, .स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
एन.एस.पटेल आर्ट्स कॉलेज,आणंद,गुजरात
Email – gohildp199@gmail.com

सारांश : 'छिन्नमस्ता' उपन्यास शोषित, पीड़ित, अपमानित प्रिया के माध्यम से इक्कीसवीं शताब्दी की नारी के लिए स्वतंत्रता के दरवाजे खोलता है | उपन्यास की नायिका प्रिया परंपरा एवं रूढियों को तोड़ती, अपने स्वतंत्रता के लिए जूझती, अपने उलझे–टूटे हुए अस्तित्व से मुकाबला करके नये संदर्भों की खोज करती है | उसका आहत ह्दय समस्त बंधनों, परंपराओं, संपति के दिखावों को झुठलाकर नया आत्म विश्वास प्राप्त करके नारी भावनाओं को नई जमीन प्रदान करती है |

मुख्य बिंदु : छिन्नमस्ता, अस्मिता, अस्तित्व, यौन-शोषण, आत्मनिर्भर इत्यादि |

१. प्रस्तावना :

हिन्दी साहित्य पिछले कुछ दशकों से विविध विमर्शों से गुजर रहा है | इनमें दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, नारी विमर्श आदि प्रमुख हैं | विश्व मैं नारी को पुरुष की अधीनस्थता की स्थिति से बाहर निकलने का अवसर पश्चिमी देशों के अनेक प्रगतिशील चिंतको के सत्यप्रयासों के कारण ही प्राप्त हुआ |

समय एवं समसामयिक परिस्थितियों के अनुसार हिन्दी साहित्य के महिला लेखन में बदलाव आता रहा है | नारी की दृष्टि से यह बदलाव शुभ ही माना जायेगा | नारी के जीवन का सूत्र बन चूका था – आँखों में पानी और आँचल में दूध | अपने अस्तित्व का पुरुष स्वयं निर्माता था, किन्तु यह अधिकार नारी को प्राप्त नहीं था | इस बात का साक्षी इतिहास है | नारी जब - जब अपने अधिकारों एवं अपने लिए अभिव्यक्ति स्वंतत्रता की माँग की तथा अन्याय – अत्याचार के विरूद्ध आवाज उठाने एवं घूंघट को त्यागकर सहज शैली में जीवन जीने का प्रयास किया, तब उसे बदचलन विशेषण दिया गया | पुरुष निर्मित नियमों, रूढ़ियों से विचलन करनेवाली स्त्री बदचलन कहलाई, परंतु आज वह क्रांतिकारी कहलाती है |

जगदीश्वर चतुर्वेदी का इस संदर्भ में अभिमत विचारणीय है – "उपेक्षा, अज्ञातवास एवं दमन की मार इतनी गहरी होती है कि स्त्री अपनी पहचान, अधिकार और निजी सत्ता ही भूल गयी या भूला दी गयी | सामाजिक, साहित्यिक इतिहास से पुंसवादी इतिहास दृष्टि ने स्त्री को खदेड़ दिया यही वजह है कि इतिहास ग्रंथों में स्त्री की सृजनात्मक एवं संघर्षशील इमेज का उल्लेख तक नहीं मिलता, हिन्दी की स्त्री कथा–लेखिकओं ने स्त्री-जीवन के प्रश्नों की अवस्थाएँ एवं द्वंधों को अपना प्रमुख विषय बनाया |"१ दूसरी और देखा जाये तो ऐसी भी नारियाँ है जो इन परंपराओं के विरोध में आवाज उठाकर स्वतंत्र रूप से अपना जीवन व्यतीत करना चाहती है | वह सीता और सावित्री की तरह मूक होकर अन्याय, अत्याचार को सहना नहीं चाहती | उसकी सोच और व्यवहार में बदलाव आया और साथ-साथ उसी वजह से शिक्षा का अधिकार, व्यवसाय के अवसर, आर्थिक आत्मनिर्भरता, संपत्ति में साझेदारी और अब सत्ता में पचास प्रतिशत आरक्षण मिला है | अपने अस्तित्व और अस्मिता के प्रति वह सहज हो चुकी है | अपने आपको नये दौर में ढालना चाहती है | महिला लेखिकाओं ने नारी स्वतंत्र व्यक्तित्व प्रदान किया है |

हिन्दी उपन्यास में कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, सूर्यबाला, मालती जोशी, मन्नू भंड़ारी, ममता कालिया, मृणाली पांडे, मेहरुन्निसा परवेज, मुदुला गर्ग, नासिरा शर्मा आदि अनेक लेखिकाओं ने नारी में आए लक्षणीय बदलाव को प्रस्तुत किया है | इन उपन्यासों में आत्मकथा, आत्मसमर्पण में गौरव के एहसास जैसी अनुभूतिओं

के स्थान पर नारी अपने को नए सिरे से तलाश रही हैं | रिश्तों को, समाज, परिवार और परिवेश में अपनी भूमिका की नए सिरे से व्याख्या कर रही हैं | वह अपने संघर्ष के जरिए नारी अस्मिता की नई पहचान करवा रही है |

'छिन्नमस्ता' शब्द से ही स्पष्ट होता है कि 'कटा हुआ सिर' | यह उपन्यास सन् १९९३ में राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है | यह उपन्यास २२४ पुष्ठों में लिखा गया है | प्रभा जी का यह सबसे अधिक चर्चित उपन्यास है | 'छिन्नमस्ता' उपन्यास की प्रिया में इन पचास वर्षों में नारी में जो परिवर्तन आया वह देखे जा सकते हैं | उपन्यास की प्रिया एक उपेक्षित, डरपोक लड़की से सुप्रतिष्ठित व्यापारी और करोड़ों में खेलनेवाली बन जाती है | अपने पति से तलाक, बच्चे से भी अलगाव और अपनी निजी पहचान की आकांशा किसी पुरुष, किसी पति की छाया से दूर | अत : इस नारी में स्वाभिमान, अहंकार, अधिकार, निर्णय लेने की क्षमता पायी जाती है |

हिन्दी की सुप्रसिद्ध कथाकार प्रभा खेतान के उपन्यास 'छिन्नमस्ता' का यह अंश प्रिया नाम की ऐसी नारी का आत्ममंथन है, जो समाज की जर्जर मान्यताओं और जीवन में महत्वपूर्ण माने जानेवाले पुरूषों की आदिम भूख से निरंतर शोषित होते रहने के बावजूद अपने आप में एक अनूठा व्यक्तित्व है, मूक विद्रोह और एकदम आदिम किस्म की जिजीविषा के साथ अस्तित्व बचाये रखने के ज्वलंत सवाल के लिए जीती ही नहीं बल्कि अपना एक स्वतंत्र मुकाम बनती है | परिस्थितियाँ उतारु हैं, अपने घात –प्रतिघातों के साथ उसे तोड़ देने पर वह भी जिद्दी है टूटती नहीं....| बचपन से निरीह होकर जीती आई प्रिया न जाने कितने आंतरिक संघर्षों को झेल कर उभरती है एक सफल औरत बनकर | पर फिर भी कहीं-कहीं वह महसूस करती रही है कि मुझे बाहर निकाल दिया हैं, लेकिन फिर भी उसे पता है कि जीना है, काम करना है, अपनी अलग आइडेन्टीटी के लिये, स्वयं के विकास के लिए | प्रिया का स्व हमेशा से जागृत था, अब वह अनमेल विवाह की असहाय बेड़ियों से बाहर निकल कर इसे 'स्व' को बिना किसी सहारे के प्रति स्थापित करना चाहती थी और उसने किया |

'छिन्नमस्ता' प्रभा जी की आत्मकथा का अधूरा अंश है | इसमें नायिका प्रिया के विवाह पूर्व तक के प्रसंग प्रभा जी के जीवन की अपनी भोगी व्यथा कथा है | परंपरा और आधुनिकता के बीच पिसी मारवाड़ी नारी की दास्तान है एवं संयुक्त परिवार में नारियों के बनते–बिगड़ते रिश्तों की टकराहट को दिखाया गया | इस कथानक में प्रभा जी ने कलकत्ता में रहनेवाले उच्चवर्गीय मारवाड़ी परिवार की कथा को समेटा है | इस उपन्यास में एक मासूम बच्ची (यानी प्रिया) के रौंदे हुए असहाय बचपन के बाद संघर्षों के पथ पर चलकर एक आत्मनिर्भर सफल नारी होने तक के सफर की कहानी है |

अपनी माँ का प्यार पाने के लिए प्रिया का बचपन तरस जाता है, लेकिन माँ ने प्रिया को कभी प्यार की छाया नहीं बखसी | प्रिया को दाई माँ ने ही पाला पोसा | वही दाई माँ जो उसके पिता की अकाल मुत्यु के दु:ख की और महज साढे नौं वर्ष की आयु में अपने ही बड़े भाई द्वारा हुए यौन-शोषण की एकमात्र साझीदार थी | बी.ए. करते ही वह बड़े भाई के सामने अपनी जुबान खोलती है और कहती है कि अब मेरे साथ ज्यादा जबरदस्ती की तो मैं ऊपर से कूद जाऊँगी | उसके बाद भाई से वह सुरक्षित हो जाती है |

इस प्रकार प्रिया बचपन में माँ, भाई से प्रताड़ित और जवानी में प्रो. मुखर्जी को शरीर सौंपकर आत्मग्लानी का अनुभव करती है तो विवाह के बाद पति नरेन्द्र से आहत होती है |

प्रिया की शादी करोड़पति बाप के इकलौते बेटे नरेन्द्र अग्रवाल से होती है | धन की, देह की पिपासा में जलता नितांत भौतिकवादी प्रिया का पति नरेन्द्र और आत्मपीड़न से ग्रस्त सासू माँ, दो नावों में घिसटते चलते ससुर और उनकी कहीं और रहती हुई बंगाली प्रेमिका तिलोत्तमा, नीना जैसी स्पष्टवादी लड़की की माँ | इस घर का सामाजिक दायरा भी अलग किस्म का है | पैसे का भरपूर दिखावा, पार्टियाँ, आयोजन प्रिया जल्द ही यहाँ भी अस्तिवहीनता का शिकार हो जाता है |

प्रिया अपने जीवन की घिसी-पिटी दिनचर्या से तंग आ जाती है | उसके स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है | प्रिया के लिए अपना स्वयं का व्यवसाय एक संयोग ही बन कर आता है | विदेश जाने का शौकीन नरेन्द्र हैण्डीक्राफ्ट के निर्यात के बहाने प्रभा को एक्सपोर्ट का काम करने का एक स्वार्थी अवसर देता है | बस यही से प्रिया के बरसों से कुचले अस्तित्व को पंख लगते हैं...वह स्वयं को खपा डालती है, इस व्यवसाय की बारीकियाँ समझ लेती है और सफलता की उड़ान उड़ने को तैयार होती ही है कि नरेन्द्र का अहम् आड़े आता है...और वह प्रिया के पंख काटने पर उतारु होकर उससे कहता है – "मुझे पहले ही चिड़िया के पंख काट डालने चाहिए थे | पर मैं तुम्हारी बातों में आ गया | तुम्हारे इस भोले चेहरे के सके |" पीछे एक मक्कार औरत का चेहरा है |"२ इस प्रकार नरेन्द्र प्रिया के व्यवसाय का विरोध करता है और व्यवसाय को लेकर दोनों के दाम्पत्य जीवन में तनाव निर्माण होता है | एक बार प्रिया को व्यापार को सिलसिले में लंदन जाना था | तब नरेन्द्र उसे जाने से मना करता है | नरेन्द्र चाहता है कि प्रिया सब काम छोड़कर घर संभाले और हरदम मेरे लिए हाजिर रहे | प्रिया नरेन्द्र से कह देती है कि वह अपने काम के लिए बाहर जाती है और अपना काम वह नहीं छोड़ सकती| अंत में नरेन्द्र उसे साफ-साफ कह देता है कि तुम्हे परिवार या व्यवसाय दोनों में से किसी एक को चुनना होगा तो प्रिया व्यवसाय को महत्व देती है | तब नरेन्द्र कहता है कि - मैं सीरियस हूँ | फिर कहता हूँ, यदि आज तुम लंदन गई तो मेरे घर में तुम्हारी जगह नहीं | यह भी साली कोई जिंदगी है, जब देखों तब बिजनेस और यह कहते हुए प्रिया को आगे कहता है कि फिर सुन लो, यहाँ मत आना, आओगी तो मैं धक्के देकर बाहर निकलवा दूँगा | फिर भी प्रिया लौटकर आती है, क्योंकि उसे अपना घर-संसार बचाये रखना था, किन्तु नरेन्द्र किसी भी हालत में उसे घर में नहीं रहने देना चाहता | प्रिया परंपरागत नारी के दर्द को समझती है | अपने पति नरेन्द्र को दो टूक जवाब देते हुए वह कहती है – "ईमानदारी, वफादारी, प्यार, समर्पण ये शब्द भ्रमजाल हैं | औरत को यह सब इसलिए सिखाये जाते हैं कि इन शब्दों के चक्रव्यूह से कभी नहीं निकल पाए ताकि युगों से चली आ रही आहुति की परंपरा को वह कायम रख सके |"३

प्रिया दूसरी नारियों की तरह हाथ पर हाथ रखे बैठे रहना नहीं चाहती | वह आत्मनिर्भर नारी है इसलिए प्रिया अपना अलग ऑफिस और घर बना लेती है| नीना व्यवस्था में उसका साथ देती है | प्रिया अपने पति के घर से कुछ भी नहीं लाती, सब कुछ छोड़कर आती है | प्रिया की दूसरी सास तिलोत्तमा जिसे प्रिया छोटी माँ कहती है, जिससे प्रिया अपनी फैक्टी स्थापित करती है | छोटी माँ और नीना के साथ प्रिया खुश है, वह अपने काम में पूर्णता महसूस करती है | यहाँ पर प्रिया के माध्यम से नारी – अस्मिता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है |

प्रिया पति और पुत्र से अलग रहकर अकेली अपनी जिंदगी को अग्रसर करती है | विदेशी बाजारों तक अपने मूर्तियाँ के व्यापार को फैलती है | प्रिया हर पीड़ा को जप्त करके अपने जीवन को नया अर्थ देती है | आत्मविश्वास को ही वह अपनी अमानत मानती है | अपनी उपलब्धियों पर प्रिया को बहोत गर्व है | वह कहती है – "मैंने अपने आपको बचाया है अपने मूल्यों को जीवन में संजोया है | हाँ, टूटी हूँ बार – बार टूटी हूँ पर कहीं तो चोट के निशान नहीं, दुनिया के पैरों तलें रौंदी गई, पर मैं मिट्टी के लोंदे में परिवर्तित नहीं हो पाई, अड़तालीस की इस उम्र में भी एक पूरी की पूरी साबूत औरत हूँ, जो जिंदगी को झेल रही बल्कि हसते हुए जी रही हूँ, जिसे अपनी उप्लब्धियों पर नाज है |"४

हाँ यह सच है कि वह न बेटी का, न बहन का, न पत्नी का और न माँ का सुख प्राप्त कर सकी | उसके जीवन में हर संबंध विरोधाभास बनकर उससे छल करता रहा | वह स्वयं कहती है – "मेरी जिंदगी विरोधाभासों का बंडल रही उलझे हुए धागे, पड़ी हुई गांठे, जानती हूँ सुलझा नहीं पाउँगी पर इनके साथ जीना तो मैंने सीख लिया है | यह समझ ही मेरी जिंदगी के प्रति लगाव को जिंदा देखती है |"५ राजेन्द्र यादव का विचार है कि – "प्रतिभा और अस्मिता से लैस प्रिया पहली नारी है जो सामाजिक चुनौतियों की तरह

उभरती है |"६ राजेन्द्र यादव प्रभा जी को नारी विमर्श की महत्वपूर्ण लेखिका प्रिया जैसे पात्रों के कारण ही स्वीकार करते हैं |

प्रिया बचपन से लेकर जवानी और अड़तालीस की उम्र तक दर्द को ओढ़ते – बिछाते आई है | वह जुड़ी से कहती है– "अपनी पूरी तस्वीर ही नही बन पाती, कभी सर गायब है तो कभी हाथ, तो कभी लगता है अंग–प्रत्यय छितरा रहे है |"७ अपने टूटे हुए असित्व से वह आहत नहीं है, क्योंकि वह जानती है – "सम्बधों का इतिहास होता है, पर घटनाओं की तारीखें नहीं हुआ करती, कब और कौन-सी घटना में हमें अलग–अलग दिशाओं में ढकेलना शुरू कर दिया याद नहीं आता | बस मुझे लगता है मनो धमाक–धमाक कोई हथोड़ों से मेरे अस्तित्व की गिट्टियों को तोड़ रहा हैं |"८ हर क्षण - हर पल टूटने के बाद भी उसका भग्न मन आगे बढ़ते रहने के संकल्पों से भरा रहा | 'छिन्नमस्ता' की प्रिया महत्वाकांक्षी नारी है | जो पुरुषों की बिछाई सारी बाँधा-दौड़ को पर करती हुई, सामाजिक सीढ़ियाँ चढ़ती हुई उप्लब्धियाँ प्राप्त करती है |

'छिन्नमस्ता' का कथानक महानगर कलकत्ता से यूरोप, न्यूयार्क, वाशिंगटन, लंदन की भूमि तक फैला है, जिससे देशी-विदेशी संस्कृतियों के दर्शन होते हैं | उपन्यास में गति देने में मारवाड़ी बोली-भाषा के शब्द सहायक सिद्ध हुए हैं | साथ ही साथ जिसमें लेखिका के अनुभवशील व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं | प्रभा जी खुद मारवाड़ी होने के नाते व्यापारीयों के व्यापार जगत का मुनाफ़ा, घाटा दोनों के माध्यम से, जीवन से उतार-चढ़ाव का वर्णन उपन्यास में है |

२. निष्कर्ष :

इस उपन्यास में मारवाड़ी परिवारों की तत्कालीन दशा व सोच को सही तरह से दर्शाया गया है | यहाँ कैरियर को लेकर किया गया विद्रोह प्रभा जी के स्वयं के व्यक्तित्व का परिचायक है | यह उपन्यास नारी शोषण, उत्पीड़न, अपमान, तनाव, घुटन, दमन, जय–पराजय एवं संघर्ष का सच्चा दस्तावेज है | जिसके केन्द्र में नारी चिंतन और विमर्श के साथ उनकी आत्मकथा के दर्शन भी होते हैं | उपन्यास की प्रिया संवेदनशील आधुनिक नारी का परिचय देती है और उसका क्रांतिकारी व्यक्तित्व पाठकों को नई दिशा देता है | इक्कीसवीं शताब्दी की नारी के लिए स्वतंत्रता के दरवाजे खोलता है और साथ ही साथ असितत्व की पहचान बनाये रखने के लिए प्रस्थापित समाज से लड़ने की शक्ति प्रदान करता है | प्रभा जी ने उपन्यास में प्रिया द्वारा पितृसत्तात्मक समाज में पुरुष वर्चस्व के विरूद्ध अपनी पहचान के लिए संघर्षरत नारी की छबि को उकेरा है|

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१.जगदीश्वर चतुर्वेदी, स्त्रीवादी साहित्य विमर्श, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर, प्रा.लि.दिल्ली, २०००. पृ.११८
२.प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, प्र सं.१९९३. पृ.११
३.वही, पृ.१२
४.वही, पृ.२५
५.वही, पृ.१५०
६.राजेन्द्र यादव, आदमी की निगाह में औरत, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, प्र.सं.२००६ पृ.२३०
७.वही, पृ.१८९
८.वही, पृ.१५४